बीटी कपास से उपज और मुनाफा बढ़ाः सर्वेक्षण

वर्ष 2002 से 2008 के बीच मध्य व दक्षिण भारत के 533 कृषक परिवारों पर किए गए एक अध्ययन का निष्कर्ष है कि बीटी कपास बीज के इस्तेमाल से कपास की उपज बढ़ी है, कीटनाशकों का उपयोग कम हुआ है और किसानों की आमदनी व जीवन स्तर बेहतर हुआ है। यह अध्ययन *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* के ताज़ा अंक में प्रकाशित हुआ है।

बीटी कपास को कपास में एक बैक्टीरिया *बेसिलस थुरिंजिएंसिस* का जीन रोपकर तैयार किया जाता है और कथित रूप से कपास की यह किस्म बोलवर्म इल्ली की प्रतिरोधी होती है।

जॉर्ज ऑगस्ट विश्वविद्यालय, गॉटिंजेन के कृषि अर्थशास्त्री मेटिन कैम और जोनास केथेज द्वारा किए गए अध्ययन में पता चला है कि बीटी कपास खेतों में उपज अन्य कपास के मुकाबले 24 प्रतिशत ज़्यादा रही। यह भी देखा गया कि इन खेतों के मालिक परिवारों ने 2006-08 के दरम्यान अन्य परिवारों के मुकाबले 18 प्रतिशत ज़्यादा पैसा खर्च किया जो शोधकर्ताओं के मुताबिक बेहतर जीवन स्तर का द्योतक है।

आम तौर पर ऐसे अध्ययनों की काफी आलोचना होती है। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि उपज में वृद्धि का पूरा श्रेय बीटी कपास को देना उचित नहीं है। ये बीज महंगे होते हैं और जब किसान इनमें पैसा लगाता है, तो वह अपनी फसल की बेहतर देखभाल भी करता है। उपज में वृद्धि का काफी बड़ा हिस्सा इस बेहतर देखभाल का परिणाम भी हो सकता है।

कई कृषि अर्थ शास्त्रियों का मत है कि मात्र 533 किसानों, और वह भी सिर्फ मध्य व दक्षिण भारत के किसानों के अध्ययन के आधार पर व्यापक निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। वैसे वर्ष 2010 में 12 देशों के 168 किसानों के एक अन्य अध्ययन में भी इसी तरह के लाभ की बात उभरकर आई थी। भारत में बीटी कपास को अनुमति 2002 में दी गई थी और आज 70 लाख किसान इसका उपयोग कर रहे हैं।

ऐसे अध्ययनों में एक बात यह भी देखी गई है कि इनमें प्रायः बड़े व सम्पन्न किसानों को ही शामिल कर लिया जाता है। अलबत्ता, कैम और केथेज का कहना है कि उन्होंने जिस तरह से किसानों का चयन किया था, उसमें इस तरह के रुझान की गुंजाइश बहुत कम कर दी गई थी।

नागपुर के केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के निदेशक केशव राज क्रांति ने इस अध्ययन की एक और समस्या की ओर ध्यान दिलाया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक महाराष्ट्र में 2010 में कपास की अधिकतम उपज 1065 किलोग्राम रिकॉर्ड की गई थी। दूसरी ओर कैम व केथेज के अध्ययन में सर्वोच्च उपज का आंकड़ा 2072 किलोग्राम है। उनके मुताबिक बीटी कपास के उपयोग से उपज में वृद्धि इतनी नाटकीय नहीं रही है। क्रांति के अनुसार उपज में वृद्धि में बीटी कपास का योगदान अभी भी एक खुला सवाल है। ***(स्रोत फीचर्स)***